रणधुरंधर

राहुल सुर्वे

“रणधुरंधर”

लेखक: राहुल सुर्वे
सभी अधिकार सुरक्षित हैं।
इस पुस्तक का कोई भी भाग लेखक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग आदि) पुनरुत्पादित, प्रसारित या संग्रहीत नहीं किया जा सकता है।
यह एक काल्पनिक कहानी है। इस पुस्तक के सभी पात्र, घटनाएँ, स्थान और परिस्थितियाँ लेखक की रचना हैं। किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति या घटना से कोई भी समानता महज़ संयोग है।

समर्पण

यह कहानी उन सभी लोगों को समर्पित है...
जिन्होंने अपनी खुशी का त्याग करके दूसरों की खुशी के लिए जीना चुना।
क्योंकि सच्चा योद्धा वही होता है जो अपने लिए नहीं, बल्कि अपने लोगों के लिए जीता है।

प्रस्तावना

उस रात... राज्य में सन्नाटा पसरा हुआ था।
लेकिन उस शांति के बीच... एक ऐसा निर्णय लिया गया जिसने इतिहास की पूरी दिशा ही बदल दी।
एक ऐसा राजा... जिसका नाम सुनकर शत्रु भी कांप उठते थे...
वह अचानक गायब हो गया। न कोई लड़ाई... न कोई हार।
लेकिन— वह गायब हो गया।
लोगों ने कहा... उसकी मौत हो गई। कुछ ने कहा... वह भाग गया।
लेकिन सच्चाई... किसी को नहीं पता थी।
इतने वर्ष बीत गए...
और उस राज्य पर एक राजा का शासन स्थापित हुआ, जिसकी आड़ में अन्याय छिपा हुआ था।
लोगों का कष्ट जारी रहा... और धीरे-धीरे उस बूढ़े राजा की कहानी महज एक स्मृति बनकर रह गई।
लेकिन...
कहानी यहीं खत्म नहीं हुई। क्योंकि कहीं दूर... हमारी जानकारी से छिपा हुआ... एक आदमी रहता था।
वह कौन था...? एक साधारण आदमी... या फिर वह खोया हुआ राजा...? और अगर वह है तो वापस क्यों नहीं आ रहा...? या फिर वह सही समय का इंतजार कर रहा है...?
क्योंकि कुछ चीजें ऐसी होती हैं... जिन्हें लौटाना मात्र उचित नहीं होता...
वे इतिहास बदलने आए हैं...

विषयसूची

अध्याय १: पराक्रमी राजा दर्शन
अध्याय 2: विरासत संबंधी चिंताएँ
अध्याय 3: पुत्र का जन्म और संकट
अध्याय 4: ऋषियों का रहस्य
अध्याय 5: राजा का बलिदान
अध्याय 6: संजय की नई यात्रा
अध्याय 7: अन्याय के विरुद्ध विद्रोह
अध्याय 8: स्वतंत्रता सेनानी
अध्याय ९: आदिवासी राजा पोंग

अध्याय 10: वापसी और अपमान
अध्याय 11: सत्य की छाया
अध्याय 12: तैयारी और योजना
अध्याय १३: अंतिम युद्ध
अध्याय 14: विजय और वापसी

अध्याय १ : पराक्रमी राजा दर्शन

सूरज डूब रहा था... आसमान लालिमा से ढका हुआ था, और उस रोशनी में, "दर्शन" राज्य का भव्य किला और भी अधिक तेजस्वी लग रहा था।
यह महज एक किला नहीं था... यह शौर्य, वीरता और शक्ति का प्रतीक था।
उस किले की ऊंची दीवारों पर खड़े सैनिक लगातार सतर्क थे। उनकी आंखों में एक अलग ही चमक थी—क्योंकि जिस राजा के लिए वे खड़े थे, वह कोई साधारण राजा नहीं था...
वे राजा दर्शन थे।
राजा अपने सिंहासन पर बैठा था। उसने चमकीला कवच पहन रखा था और उसकी आँखों में एक अलग ही तीक्ष्णता थी। उसका चेहरा एक ही समय में गंभीर और शांत था।
उन्होंने अपने जीवन में कई लड़ाइयाँ जीती थीं...
उसका कभी छोटा सा राज्य अब दूर-दूर तक फैल गया था। यह सब उसकी तलवार की शक्ति और उसकी बुद्धि के बल पर संभव हुआ था।

“महामहिम!” दरबार से एक सिपाही दौड़ता हुआ आया और विनम्रतापूर्वक झुककर बोला, “सीमा पर फिर से शत्रु की हलचल देखी गई है।”
दर्शन राजा ने हल्की सी मुस्कान दी...
"क्या उन्हें लगता है कि वे अब भी हमें हरा सकते हैं?" उसने धीमी आवाज़ में कहा।
सिपाही सिर झुकाए खड़ा था।

दर्शन उठते हुए बोला, "सेना तैयार करो। इस बार हम उन्हें ऐसा सबक सिखाएंगे... कि वे फिर कभी हमारी सीमाओं की ओर मुड़कर नहीं देखेंगे।"
उनकी आवाज धीमी थी... लेकिन उसमें निहित दृढ़ता स्पष्ट थी।

कुछ ही घंटों के भीतर युद्धक्षेत्र को सजा दिया गया...
एक तरफ दूरदृष्टि की विशाल सेना है, और दूसरी तरफ दुश्मनों की सेना है।
घोड़ों की आवाज, तलवारों की खड़खड़ाहट और सैनिकों का उत्साह—सब कुछ वातावरण में व्याप्त था।

“हमला करो!!!” दर्शन की आवाज युद्धक्षेत्र में गूंज उठी...
और अगले ही पल युद्ध शुरू हो गया।
तलवारों की खड़खड़ाहट, ढालों की झनझनाहट, घोड़ों की सरपट दौड़... मानो मौत का नाच शुरू हो गया हो।

दर्शन स्वयं युद्धक्षेत्र के बीचोंबीच उतर आया था।
हर प्रहार में सटीकता थी और हर हरकत में अनुभव झलक रहा था।
शत्रु सैनिक उसके सामने टिक नहीं सके...

इसके कुछ ही समय बाद युद्ध समाप्त हो गया...
और एक बार फिर दर्शन राज्य पर विजय का झंडा लहरा रहा था।

राज्य भर में उत्सव शुरू हो गए।
लोग खुशी से चिल्ला रहे थे —"जय राजा दर्शन! जय राजा दर्शन!"

लेकिन उस उल्लास के पीछे...दर्शन के मन में एक दबी हुई चिंता छिपी हुई थी...
उसके पास सब कुछ था—सत्ता, धन और अपनी प्रजा का प्यार...
लेकिन एक चीज की कमी थी... एक उत्तराधिकारी की।

उस रात वह महल की छत पर अकेला खड़ा था...
आकाश में चंद्रमा चमक रहा था, लेकिन उसके दिल में अंधेरा छाया हुआ था।
"मैं यह सब किसके लिए कर रहा हूँ...?" उसने धीमी आवाज़ में खुद से कहा।

और वह सवाल...उसे अपने जीवन का सबसे बड़ा फैसला लेने के लिए मजबूर कर देगा...

अध्याय 2: विरासत संबंधी चिंताएँ

रात अंधेरी थी...
पूरा महल शांत था, लेकिन उस सन्नाटे में भी बेचैनी का एहसास था।
राजा अभी भी सोया नहीं था।
वह किले की ऊंची छत पर खड़ा होकर दूर आसमान की ओर देख रहा था...
उसके चेहरे पर दिन की कठोरता नहीं थी — आज वह सिर्फ एक राजा ही नहीं था... बल्कि एक असहाय व्यक्ति था।

"महामहिम..."
रानी ने पीछे से धीमी आवाज में पुकारा।
दर्शन धीरे से मुड़ा। रानी उसकी ओर आ रही थी। उसके चेहरे पर चिंता स्पष्ट रूप से झलक रही थी।

"तुम अभी तक सोए नहीं हो?" वह पास आते हुए पूछती है।
दर्शन हल्की सी मुस्कान लाने की कोशिश करता है,
"नींद नहीं आ रही..."

रानी एक पल के लिए चुप रहती है... वह आती है और उसके बगल में खड़ी हो जाती है।
कुछ देर तक दोनों में से कोई कुछ नहीं बोलता।
केवल हवा चलती है... और मेरे मन में विचार आते हैं।

"तुम अब भी उसी बात के बारे में सोच रहे हो, है ना...?" रानी ने धीमी आवाज़ में पूछा।
दर्शन ने कोई जवाब नहीं दिया... लेकिन उसकी आंखों में सब कुछ स्पष्ट था।

"हमारे राज्य का कोई उत्तराधिकारी नहीं है..."
ये शब्द हवा में गूंजते रहे...

दर्शन ने गहरी सांस ली। "मैंने जीवन भर संघर्ष किया... राज्य का विस्तार किया... शत्रुओं को परास्त किया..."
उसने धीमी आवाज में कहा, "लेकिन आज... मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं खुद को खो रहा हूँ..."

रानी की आंखों में आंसू भर आए... "महाराज, आप ऐसा क्यों कह रहे हैं...?" उसने कांपती हुई आवाज में कहा।

“क्योंकि यह सच है...” दर्शन की आवाज अब थोड़ी कठोर हो गई थी।
मेरे बाद इन सबका ख्याल कौन रखेगा...? क्या मेरे द्वारा बनाया गया राज्य... इसी तरह नष्ट हो जाएगा?

रानी ने हल्के से उसका हाथ पकड़ा। “ईश्वर पर भरोसा रखो... सब ठीक हो जाएगा...”

दर्शन ने आकाश की ओर देखा... “मैंने कितने ही युद्ध जीते हैं... लेकिन आज मैं भगवान से हार गया...”

उस रात... उन दोनों ने एक बड़ा फैसला लिया...
वे ईश्वर की सहायता मांगने जा रहे थे।

अगले कुछ दिनों में... पूरे राज्य में यज्ञ और पूजा-अर्चना शुरू हो गई। महान ऋषियों, संतों और विद्वानों को आमंत्रित किया गया। स्वयं राजा दर्शन भी हर अनुष्ठान में भाग ले रहे थे।

“हे भगवान... मुझे एक वारिस दे दो...” वह मन ही मन प्रार्थना कर रहा था...

रानी भी दिन-रात ईश्वर के चरणों में बैठती थीं। उनकी आँखों में बस एक ही सपना था—एक नन्हा बच्चा... जो इस राज्य का भविष्य बनेगा।

और अंत में...
उनकी प्रार्थना का उत्तर मिल गया...

अध्याय 3: पुत्र का जन्म और संकट

भोर की पहली किरणें महल पर पड़ रही थीं... और उसी क्षण, एक खुशखबरी हवा की तरह पूरे महल में फैल गई —
“राजा का एक बेटा हुआ है!”

देखते ही देखते पूरे राज्य में जश्न शुरू हो गया।
ढोल बजने लगे... लोग नाचने लगे... चारों ओर खुशी का माहौल छा गया।

अदालत ने घोषणा की —
“राजा दर्शन को पुत्र प्राप्ति हुई है!”

दर्शन राजा स्वयं उस नन्हे बच्चे को देख रहे थे...
उनकी आंखों में आंसू थे—लेकिन वे दुख के नहीं थे... वे खुशी के थे।

"यही हमारे राज्य का भविष्य है..." उसने धीमी आवाज में कहा।
रानी के चेहरे पर संतोष का भाव था... उनका सपना सच हो गया था।

कुछ दिनों तक पूरा राज्य खुशी में डूबा रहा... बारिश की तैयारियां शुरू हो गईं। पूरे राज्य को सजाया गया...

लेकिन...
जैसे-जैसे दिन बीतते गए... सबने एक बात पर ध्यान देना शुरू कर दिया...

बच्चा अलग तरह से व्यवहार कर रहा था...

वह बहुत कमजोर दिख रहा था...
उसकी चाल धीमी थी...
और उनकी सांसें भी कभी-कभी अनियमित हो जाती थीं...

रानी डर गई थी...
"महाराज... कुछ ठीक नहीं है..." उसने कांपते हुए कहा।

दर्शन ने तुरंत शाही चिकित्सक को बुलाया।
एक नहीं... दो नहीं... बल्कि दूर-दराज के राज्यों से महान चिकित्सकों को लाया गया।

महल में अब खुशी की जगह चिंता का माहौल है...
डॉक्टर जांच कर रहे थे... दवा दे रहे थे...
लेकिन...
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

"महामहिम..." एक बूढ़े डॉक्टर ने गंभीर स्वर में कहा,
"हमने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की... लेकिन यह बीमारी हमारी समझ से परे है..."

यह सुनकर रानी की आंखों में आंसू भर आए...
"नहीं! कोई न कोई हल जरूर होगा!" वह रोते हुए बोली।

दर्शन चुपचाप खड़ा रहा...
लेकिन अंदर से वह पूरी तरह टूट चुका था...

"हे भगवान... ये कैसी परीक्षा है...?" उसने मन ही मन कहा।

कुछ दिन पहले जहां खुशी थी...अब वहां डर का साया मंडरा रहा था...

बरसा का दिन नजदीक आ रहा था...
लेकिन अब उस खुशी पर एक काला साया छा गया था...

और ठीक उसी समय...
एक अजनबी महल के द्वार पर आया...
एक ऋषी...

उनकी आंखों में एक अलग ही चमक थी...
ऐसा लग रहा था मानो उन्हें पहले से ही सब कुछ पता हो...

"मैं महाराज से मिलना चाहता हूँ..." उसने धीमी आवाज़ में कहा।

और उस क्षण से...
राजा दर्शन की जिंदगी में एक बड़ा बदलाव आने वाला था...

जिससे उसका पूरा जीवन बदल जाएगा...

अध्याय 4: ऋषियों का रहस्य

महल के प्रांगण में एक अजीब सी खामोशी छाई हुई थी... सबका ध्यान उस एक व्यक्ति पर था—वह रहस्यमय ऋषि।

उनके चेहरे शांत थे... लेकिन उनकी आंखों में एक रहस्यमय गहराई थी।
ऐसा लग रहा था मानो वे न केवल वर्तमान बल्कि भविष्य को भी देख सकते हों।

“महामहिम...” उसने धीमी आवाज में कहा, “मैं आपसे निजी तौर पर बात करना चाहता हूँ।”

दर्शन। राजा और रानी एक दूसरे को देखते हैं...
और फिर वे दोनों उस ऋषि को एक गुप्त कमरे में ले जाते हैं।

अब उस कमरे में सिर्फ तीन ही लोग बचे थे...
बाहर एकदम सन्नाटा...
लेकिन अंदर का वातावरण तनावपूर्ण हो गया था।

“मैं सब कुछ जानता हूँ...” ऋषि ने शांत स्वर में कहा।

रानी आश्चर्यचकित रह गईं — “क्या...?”

“आपके बेटे की बीमारी...” उन्होंने आगे कहा, “और कोई डॉक्टर इसका इलाज नहीं कर सकता...”

दर्शन की आंखों में आश्चर्य और भय दोनों स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे।
“तो... क्या कोई समाधान है?” वह जल्दबाजी में पूछता है।

ऋषि कुछ क्षणों तक मौन रहे...
और फिर उसने धीमी आवाज़ में कहा—

“इसका समाधान है... लेकिन यह आसान नहीं है...”

रानी की सांस अटक गई...
“मुझे क्या करना होगा...?” वह डरते हुए पूछती है।

ऋषि ने दर्शन की ओर सीधी दृष्टि डाली...
“महाराज... आपको 15 वर्षों तक पूर्ण त्याग करना होगा।”

एक पल के लिए कमरे में पूरी तरह सन्नाटा छा गया...

“त्याग...?” दर्शन ने धीमी आवाज में पूछा।

“हाँ...” ऋषि ने कहा, “तुम्हें अपना राज्य, अपना नाम, अपनी पहचान—सब कुछ त्यागना होगा।”

रानी की आंखों में आंसू आ गए...
"यह कैसे संभव है...?"

ऋषि ने आगे कहा—
“तुम 15 साल तक एक आम इंसान की तरह छुपकर रहे, और उस दौरान तुमने कभी किसी को अपनी असली पहचान नहीं बताई...”
तभी तुम्हारा बेटा बच पाएगा।

यह सुनकर दर्शन दंग रह गया...

“और अगर... तुम ऐसा नहीं करोगे...?” उसने कांपती हुई आवाज में पूछा।

ऋषि की आवाज गंभीर हो गई...
तो आपका बेटा... ज्यादा दिन तक जीवित नहीं रहेगा।

रानी ने अपनी आंखें बंद कर लीं...
उसकी आँखों से आंसू बहने लगे...

दर्शन के मन में उथल-पुथल मच गई थी...
एक ओर उसका राज्य... दूसरी ओर उसका पुत्र...

“महाराज...” रानी ने उनका हाथ थाम लिया।
हम अपने बेटे को खो नहीं सकते...

दर्शन ने अपनी आंखें बंद कर लीं...
वह कुछ क्षणों के लिए पूरी तरह चुप रहा...

और तब...
उन्होंने आँखें खोलीं...
उनके चेहरे पर एक बार फिर वही दृढ़ संकल्प झलक रहा था।

"मैं तैयार हूँ।"

रानी ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा...

“मैं अपने बेटे के लिए कुछ भी करने को तैयार हूँ...” दर्शन ने दृढ़ता से कहा।

ऋषि ने सिर हिलाया...

“तो याद रखना...” उसने कहा,
“आपको इसे बारह दिनों के दूसरे दिन से शुरू करना है... और 15 वर्षों की समाप्ति तक... किसी को भी आपकी पहचान नहीं पता होनी चाहिए।”

“एक छोटी सी गलती...और सब कुछ खत्म हो जाएगा।”

ये शब्द हवा में गूंजते रहे...

उस दिन के बाद... महल में तैयारियां शुरू हो गईं — बरशा के महल में...

लेकिन इस बार... उस खुशी के पीछे एक बड़ा रहस्य छिपा था...

और राजा दर्शन... अपने जीवन का सबसे बड़ा बलिदान देने के लिए तैयार हो रहे थे...

अध्याय 5: राजा का बलिदान

बरशा का दिन आ गया... पूरा राज्य एक बार फिर हर्षोल्लास में डूब गया। ढोल बज रहे थे, सजावटें थीं, मेहमानों की भीड़ थी—हर तरफ उत्साह का माहौल था...

महल के बीचोंबीच नन्हा राजकुमार विराजमान था...
उनका नाम दिया गया था —
“स्वराज”

“स्वराज...” दर्शन ने धीमी आवाज में यह नाम लिया...
उनकी आंखों में प्यार और दर्द दोनों झलक रहे थे...

संपूर्ण अनुष्ठान संपन्न हुआ...
लोग खुशी से झूम रहे थे...
लेकिन...
उस खुशी के पीछे एक सच्चाई छिपी थी—जिसे केवल वे तीनों ही जानते थे...
राजा, रानी... और वह ऋषि।

रात हो चुकी है...
धीरे-धीरे सभी मेहमान चले गए...
महल में फिर से सन्नाटा छा गया...

दर्शन अपने कमरे में चला गया...
रानी स्वराज को अपनी गोद में लिए बैठी थीं...

कुछ पल के लिए किसी ने कुछ नहीं कहा...
बस शांति...
और आंखों में आंसू...

“समय आ गया है...” दर्शन ने धीमी आवाज में कहा।

रानी की आंखों से आंसू बहने लगे...
“क्या तुम सचमुच जा रहे हो...?” उसने कांपती हुई आवाज में कहा।

दर्शन उसके पास बैठ गया...

उसने स्वराज की ओर देखा...
वह शांति से सो रहा था...

दर्शन ने धीरे से अपना हाथ उसके सिर पर रख दिया...
“मेरे लिए नहीं... लेकिन इसके लिए...”

रानी अपना सिर उसके कंधे पर रखकर रोने लगती है...
“15 साल... यह बहुत लंबा समय है...”

दर्शन ने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया...
“मैं वापस आऊंगा...” उसने धीमी आवाज़ में कहा।
और तभी... मैं अपने बेटे को पहली बार एक शक्तिशाली योद्धा के रूप में देख पाऊंगा।”

रानी ने अपने आंसू पोंछे...
मुझे सबको क्या बताना चाहिए...?

दर्शन ने एक पल सोचा और कहा, "मुझे बताओ...कि राजा तपस्या करने गए हैं..." "और किसी को भी मुझे ढूंढने की कोशिश न करने देना।"
रानी ने सिर हिलाया...

कुछ देर बाद... वो पल आ गया...

वह दिव्य दृष्टि महल के एक गुप्त मार्ग के पास खड़ी थी... उस मार्ग के बारे में बहुत कम लोगों को ही पता था...

वह आखिरी बार पीछे मुड़कर देखता है...
उसके सामने उसका राज्य है... उसका जीवन है... और उसके पीछे उसकी रानी और उसका नन्हा बेटा है...

“स्वराज...” उसने मन ही मन कहा...

और तब...
वह पीछे मुड़े बिना आगे बढ़ता रहा...

जैसे ही हम उस अंधेरे रास्ते से बाहर निकले... राजा का दर्शन समाप्त हो गया...

और इस तरह “संजय” का जन्म हुआ।

बाहर घना अंधेरा था... और वह अकेला चल रहा था...
न कोई सेना... न कोई शक्ति... न कोई पहचान... बस एक वादा।
15 वर्षों का बलिदान।

उस रात... एक राजा अपने राज्य से विदा हो गया...
लेकिन पिता का जन्म अपने बेटे के लिए हुआ था...

अध्याय 6: “संजय” की नई यात्रा

सुबह की ठंडी हवा बह रही थी... दूर क्षितिज पर सूरज उग रहा था... और उस रोशनी में एक अकेला आदमी चल रहा था...

तो होता — संजय.

जो राजा कल तक... आज एक साधारण यात्री बन गया था।
कोई शाही पोशाक नहीं...
हाथ में तलवार नहीं।
साधारण कपड़े... और आंखों में एक शांत दृढ़ संकल्प।

“15 साल...” उसने मन ही मन कहा,
“बस 15 साल... और फिर मैं वापस आऊंगा...”

वह कुछ दिनों तक चलता रहा...
पहाड़, जंगल, सुनसान सड़कें—वह कहीं नहीं रुका।

उसके मन में केवल एक ही बात थी—
आप किसी को भी अपनी पहचान नहीं बताना चाहते।

कुछ दिनों बाद...
उसने एक छोटा सा गाँव देखा।
धुआँ उगलने वाले चूल्हे...मिट्टी के घर...खेतों में काम करने वाले लोग...

संजय रुक गया...
उसने उस गाँव की ओर देखा...

“शायद... हम यहीं रुक सकते हैं...” उसने मन ही मन कहा।

वह धीरे-धीरे गांव में दाखिल हुआ...
लोग उसे उत्सुकता भरी निगाहों से देख रहे थे...

“तुम कौन हो...?” एक बूढ़े आदमी ने पूछा।

संजय कुछ देर चुप रहा...
और फिर उसने धीमी आवाज़ में कहा—
"मेरा नाम संजय हे।"

उस क्षण से...
राजा दर्शन पूरी तरह पीछे रह गए...

गांव में जीवन बहुत अलग था...
सुबह सूरज उगते ही काम शुरू हो जाता है... दिन भर कड़ी मेहनत... और रात को थककर सो जाना...

संजय ने भी धीरे-धीरे यह सब स्वीकार कर लिया।
उन्होंने खेतों में काम करना शुरू किया... लोगों की मदद करते हुए...

पहले तो लोगों ने उस पर विश्वास नहीं किया...
लेकिन...
उनके व्यवहार में ईमानदारी देखकर...
धीरे-धीरे लोग उससे बात करने लगे।

“यह आदमी कुछ अलग ही है...” लोग आपस में बात कर रहे थे।

कारण...
भले ही यह देखने में सरल लगे...
फिर भी उनके भाषण में, उनकी चाल में...
शाही दृढ़ता का भाव अब भी महसूस किया जा रहा था।

एक दिन...
संजय गांव में बैठा था...
फिर उसने कुछ लोगों को फुसफुसाते हुए सुना—

"हमारे राजा की मुसीबतें दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं..."
“कर बढ़ाना... लोगों की हत्या करना...”

संजय का चेहरा गंभीर हो गया...

“क्या राजा... ऐसा होता है...?” उसने मन ही मन कहा।

उन्होंने जीवन भर अपनी प्रजा की रक्षा की...
और यहां...
स्वयं राजा ही जनता का शत्रु बन गया था...

उस रात...
संजय को नींद नहीं आई...
वह आकाश की ओर देख रहा था...

“मैं तो बस यहाँ छिपने आया था...” उसने मन ही मन कहा।
लेकिन अगर अन्याय मेरी आंखों के सामने हो रहा है...तो क्या मैं चुपचाप बैठ सकता हूँ...?

उस प्रश्न का उत्तर उनके भीतर से ही आया।
"नहीं।"

और उस क्षण से...
संजय के जीवन ने एक नई दिशा ले ली...

उस रात के बाद... संजय एक ही बात सोचता रहा —
अन्याय को सहन करना भी एक अपराध है।

दिन बीतते जा रहे थे...
लेकिन गांव में हालात बदतर होते जा रहे थे।
राजा के सैनिक प्रतिदिन गांव में आते हैं...
कर वसूलना... लोगों को पीटना... और अगर कोई विरोध करे तो...
उसे दंड दिया जा रहा था।

एक दिन...
जब संजय खेत में काम कर रहा था...
उन्होंने एक दिल दहला देने वाली घटना देखी...

राजा के कुछ सैनिक एक बूढ़े आदमी को पीट रहे थे...
"क्या तुमने अपना टैक्स नहीं चुकाया?" एक सैनिक चिल्लाया।

"मेरे पास कुछ नहीं है..." बूढ़े आदमी ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

लेकिन सैनिक रुके नहीं...

वह दृश्य देखकर...
संजय का गुस्सा भड़क उठा...

वह दौड़कर वहां पहुंचा...
और उसने एक सैनिक का हाथ पकड़ लिया।

"बस करो!" उसकी आवाज गूंज उठी।

सैनिक आश्चर्यचकित रह गए...
"तुम कौन हो...?" एक ने गुस्से से पूछा।

संजय ने धीमी आवाज़ में कहा—
"एक ऐसा व्यक्ति... जो अन्याय को सहन नहीं कर सकता।"

सभी लोग एक पल के लिए रुक गए...

लेकिन फिर सैनिक हंसने लगे...
"देखो... एक नया हीरो आ गया है!" उसने शरारती लहजे में कहा।

अगले ही पल...
एक सिपाही ने अपनी तलवार निकाली और संजय की ओर बढ़ा...

लेकिन...

संजय ने आसानी से उसके वार को रोक दिया...
और पलक झपकते ही वह नीचे गिर गया।

बाकी सैनिक डरे हुए थे...

“यहाँ से निकल जाओ!” संजय दहाड़ा।

सैनिक भाग गए...

ग्रामीण स्तब्ध खड़े थे...

“ये कौन है...?” वे एक दूसरे से पूछ रहे थे।

उस दिन के बाद...
गांव में एक अलग ही माहौल बन गया था।

धीरे-धीरे लोग संजय के पास आने लगे...

“क्या आप हमारी मदद कर सकते हैं...?” एक युवक पूछता है।

संजय कुछ पल चुप रहता है...

“मैं अकेले कुछ नहीं कर सकता...” वे कहते हैं।
लेकिन साथ मिलकर हम कुछ भी कर सकते हैं।

लोग एक दूसरे की ओर देखते हैं...

डर अब भी बरकरार था...

“राजा के विरुद्ध जाना मृत्यु के समान है...” किसी ने कहा।

संजय आगे आया...
उसकी आँखों में एक अलग ही चमक थी।

“मृत्यु के भय में जीने और आत्मसम्मान के लिए लड़ते हुए मरने के बीच के अंतर को समझें...”
“डर शायद आपकी जान बचा ले... लेकिन आपकी इज्जत नहीं। और जिसके पास इज्जत नहीं है... वह जिंदा होते हुए भी मरा हुआ है!”

उन शब्दों ने सबके दिलों को छू लिया...

“आप तय कीजिए...” संजय ने आगे कहा,
“गुलाम बनकर जियो...या आत्मसम्मान के साथ लड़ो।”

कुछ क्षणों का मौन...

और तब...
एक आदमी आगे आया...
"मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

फिर एक और...
तीसरा...

और चारों ओर देखते हुए...
पूरा गांव उसके पीछे खड़ा था।

उस रात...
एक गुप्त बैठक हुई...

“हम हमला करेंगे...” संजय ने धीमी आवाज़ में कहा।

“लेकिन कैसे...?” किसी ने पूछा।

संजय के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई...

“युद्ध केवल तलवार से ही नहीं जीते जाते...बल्कि बुद्धिमत्ता से जीते जाते हैं।”

उसने मुझे योजना बताई...

और तब...
वह दिन आ गया है...

यह रात थी...
चारों ओर अंधेरा...

राजा के सैनिक लापरवाह थे...

और अचानक...

"आक्रमण करना!!!"

ग्रामीणों ने हमला किया

सैनिक असमंजस में थे...

देखते ही देखते... पूरी स्थिति बदल गई...

पहली बार लोगों ने भय पर विजय प्राप्त की थी।

सुबह हो चुकी थी...और उस गांव में...एक नया सूरज उगा।

लोग खुशी से चिल्ला रहे थे - "हम जीत गए!"

वे संजय को ऐसे देख रहे थे... मानो वह उनका नेता हो...

लेकिन संजय वहीं खड़ा रहा...

क्योंकि वह जानता था...

"यह तो एक शुरूआत है..."

अध्याय 8: स्वतंत्रता सेनानी

उस पहली जीत के बाद... गांव में सब कुछ बदल गया था। लोगों की आंखों में अब डर नहीं था... बल्कि आत्मविश्वास था।

"हम जीत गए..." ये शब्द अब भी सबके होठों पर थे।

लेकिन संजय को पता था...
यह तो एक शुरूआत है।

एक रात...
वह गांव के बाहर अकेला बैठा था।
आकाश की ओर देखते हुए...

"अगर एक गाँव में यह संभव है...तो बाकी गाँवों का क्या होगा...?" वह मन ही मन सोच रहा था।

उसके मन में एक विचार घर कर गया—
"जहां कहीं भी अन्याय है... हमें वहां लड़ना होगा!"

अगले ही दिन...
वह कुछ वफादार लोगों के साथ दूसरे गांव के लिए रवाना हो गया।

वह गाँव...
यह पहले गांव की तुलना में और भी बदतर स्थिति में था।

लोग डरे हुए थे...सैनिक अत्याचार कर रहे थे...

"हम कुछ नहीं कर सकते..." वहां मौजूद लोगों ने कहा।

संजय उनके बीच खड़ा था...

"तुम पहले ही हार चुके हो...क्योंकि तुम लड़ने के लिए तैयार नहीं हो!"

लोग शांत हो गए...

उन्होंने उन्हें पहले गांव की कहानी सुनाई...

"अगर वे कर सकते हैं...तो आप क्यों नहीं कर सकते...?"

धीरे से...
यहां भी लोग तैयार थे।

और एक बार फिर...
यह विद्रोह रात के अंधेरे में बुलाया गया था।

इस बार...
यह लड़ाई और भी बड़ी थी...

लेकिन...
संजय के नेतृत्व में...
जनता की फिर से जीत हुई।

अब यह खबर फैल रही है।

"एक ऐसा व्यक्ति है... जो लोगों को एकजुट करता है... और उन्हें अन्याय के खिलाफ खड़े होना सिखाता है..."

एक नाम हर जगह सुनाई देने लगा —
"संजय"

वह अब महज एक इंसान नहीं रह गया था...
वह बन रहा था—
एक आशा.

एक गाँव...
दूसरा गाँव...
तीसरा गाँव...

ऐसा करने से...
संजय ने कई गांवों को आजादी दिलाई।

लोग उन्हें सिर्फ एक नेता के रूप में ही नहीं देखते...
इसलिए वे उसे उद्धारकर्ता के रूप में देखने लगे।

लेकिन...
संजय ने कभी खुद को राजा नहीं समझा...

वह हमेशा कहते थे— “मैं आप ही में से एक हूँ।”

एक दिन... एक युवक उसके पास आया...

"तुम असल में हो कौन...?" उसने सीधे-सीधे पूछा।

संजय एक पल के लिए चुप रहे... और फिर हल्की मुस्कान के साथ बोले — “एक ऐसा आदमी... जो अन्याय बर्दाश्त नहीं कर सकता।”

वह अपनी असली पहचान छिपा रहा था...

कारण...
वह जानता था—एक गलती... और सब कुछ खत्म हो जाएगा।

लेकिन... उसकी इस यात्रा में... उसका नाम, उसकी पहचान... धीरे-धीरे एक कहानी बनती जा रही थी।

लोग कहने लगे थे — “संजय आएगा... और सब कुछ बदल जाएगा।”

और ऐसी यात्रा पर...

जंगल से गुजरते हुए...

उसके जीवन में एक नया मोड़ आने वाला था...

अध्याय ९ : आदिवासी राजा पोंग

दिन ढल रहा था... संजय और उसके कुछ साथी एक घने जंगल से गुजर रहे थे।

जंगल शांत था... लेकिन उस शांति में एक अजीब सा डर समाया हुआ था...
पक्षियों की आवाजें भी थम सी गई थीं...

“कुछ तो गड़बड़ है...” संजय ने धीमी आवाज में कहा।

वे आगे बढ़ रहे थे...
और अचानक—

“आह!!!”

जंगल में एक तेज आवाज गूंजी...

सब लोग रुक गए...

"कोई मुसीबत में है!" एक ने कहा।

संजय ने बिना समय बर्बाद किए उसकी ओर दौड़ लगाई...

सामने का दृश्य देखकर वह थम गया...

एक आदमी जमीन पर लेटा हुआ था...और कुछ जंगली जानवर उस पर हमला कर रहे थे।

संजय ने बिना एक पल भी सोचे अपनी तलवार उठा ली...

"हट!"

वह उन जानवरों पर गिर पड़ा।

कुछ ही क्षणों में...
उन्होंने उस आदमी की जान बचाई...

वह व्यक्ति अर्धचेतन अवस्था में था...

"तुम कौन हो...?" उसने धीमी आवाज में कहा।

संजय ने सिर्फ इतना ही कहा —
"एक ऐसा आदमी... जो मदद करता है।"

कम समय में...
जंगल में अचानक हलचल हुई...

आस-पास परछाइयाँ दिखाई देने लगीं...

थोड़ी देर में...
संजय और उसके साथी आदिवासी योद्धाओं से घिरे हुए थे।

उनके हाथों में भाले... धनुष... उनकी आँखों में सतर्कता...

"यही हमारे राजा हैं!" एक आदिवासी ने जोर से चिल्लाकर कहा।

संजय हैरान रह गया...

जिसकी जान उन्होंने बचाई...
वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे...

वह उस कबीले का राजा था।

कम समय में...
संजय को उसके गांव ले जाया गया...

हर जगह का माहौल बिल्कुल अलग था...
आग जल रही थी...लोग नाच रहे थे...ढोल बज रहे थे...

एक खुशी।

“आपने हमारे राजा की जान बचाई...” एक बूढ़े आदिवासी ने कहा,
आज से आप हमारे लिए खास हैं।

संजय चुपचाप खड़ा रहा...

कुछ समय बाद...
उस कबीले का सरदार आगे आया...

उनके चेहरे पर सम्मान का भाव था...

“मेरा नाम किंग पोंग है,” उसने कहा।
और आज आपने मेरी जान बचाई...

संजय ने विनम्रतापूर्वक अपना सिर झुकाया...

“यह मेरा कर्तव्य था...” उसने धीमी आवाज़ में कहा।

पोंग मुस्कुराया...

“आज से... तुम हमारी अदालत में मेरे बगल में बैठोगे।”

यह सुनकर सब लोग चौंक गए...

यह सम्मान बहुत बड़ा था...

लेकिन संजय को इस बात पर जरा भी गर्व नहीं था...

वह बस मुस्कुराया...

उस रात...
जंगल में उत्सव मनाया जा रहा था।

संजय अब उस जनजाति के साथ रहने लगा...

धीरे से...
वह उनके साथ घुलमिल गया...

उन्होंने उन्हें युद्ध कला सिखाना शुरू किया...

और उनसे...
उसने जंगल में जीवित रहने की कला सीखना शुरू कर दिया...

राजा पोंग और संजय के बीच गहरी दोस्ती विकसित हुई...

लेकिन...
संजय के मन में एक ही बात रह गई थी —

"पंद्रह साल हो गए हैं..."

और समय... धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था...

एक दिन...
वह क्षण आ गया है...

पंद्रह साल बीत चुके हैं।

संजय चुपचाप खड़ा रहा...

“अब समय आ गया है...” उसने मन ही मन कहा।

उनकी आंखों के सामने...
उसका राज्य... उसकी रानी... और उसका पुत्र...

सब कुछ थम सा गया...

और उसने फैसला किया—
मैं वापस जाऊंगा।

लेकिन...
यह उनकी वापसी है...
यह इतना आसान नहीं होता...

अध्याय 10: वापसी और अपमान

पंद्रह साल बीत गए थे... और आज... संजय एक बार फिर उसी सड़क पर खड़ा था...

उसके सामने उसका अपना किला दिखाई दे रहा था।

वह कुछ पल चुपचाप खड़ा रहा...

उसकी आँखों में भावनाएँ उमड़ पड़ीं...

“15 साल...” उसने धीमी आवाज में कहा।
"मैं वापस आ गया हूं..."

वह धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा...

हर कदम के साथ...
उसके मन में यादों का सैलाब उमड़ रहा था...

वे महल के दरवाजे...
वो सड़कें...
यही माहौल है...

लेकिन...
कुछ तो अलग था...

वह प्रवेश द्वार पर पहुँच गया...

“रुको!” एक सैनिक ने जोर से चिल्लाया।

संजय रुक गया...

“तुम कौन हो...?” सैनिक ने सख्त स्वर में पूछा।

संजय ने धीमी आवाज़ में कहा—
“मैं... राजा दर्शन हूँ।”

एक पल का मौन...

और तब...
सभी सैनिक जोर-जोर से हंसने लगे।

“तुम क्यों सुन रहे हो...?” एक सैनिक ने मुस्कुराते हुए कहा।
“यही तो राजा है!”

संजय चुपचाप खड़ा रहा...

“मेरी बात सुनो...” उसने धीमी आवाज़ में कहा।
"मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ..."

लेकिन सैनिक सुनने को तैयार नहीं थे...

“यहाँ से निकल जाओ!” वे गुस्से से चिल्लाए।

तब ही...

एक सेनापति घोड़े पर सवार होकर वहाँ आया...

“यहाँ क्या चल रहा है...?” उसने कठोर स्वर में कहा।

सैनिकों ने सब कुछ बता दिया...

कमांडर ने संजय की ओर देखा...

“राजा दर्शन...?” उसने व्यंग्यपूर्वक कहा।
उनका निधन 15 साल पहले हुआ था।

ये शब्द सुनकर...
संजय के दिमाग में कुछ गड़बड़ हो गई...

“नहीं... मैं जीवित हूँ...” उसने कहा।

लेकिन कमांडर ने गुस्से से चिल्लाते हुए कहा—
“तुम झूठ बोल रहे हो! क्या तुम राजा के नाम का इस्तेमाल करके मुझे धोखा दे रहे हो?”

और अगले ही पल...

“इसे यहाँ से बाहर निकालो!”

सैनिकों ने उसे धक्का दिया...

संजय कुछ कदम पीछे हट गया...

उसने कुछ कहा नहीं...

मैं चुपचाप उस दरवाजे को देखता रहा...

जिस द्वार से वह राजा बनकर प्रवेश किया था...आज उसे हटाया जा रहा था...

उस सारी अफरा-तफरी में...

एक 15 वर्षीय लड़का खड़ा था...

वह सब कुछ शांति से देख रहा था...

उसकी आँखों में हैरानी थी...

"मेरी माँ ने मुझे जो विवरण दिया था..." उसने मन ही मन कहा।
"ये... ये हैं..."

तो होता — स्वराज.

उसकी आंखों में आंसू आ गए...

"ये मेरे पिता हैं..."
उसने इसे अपने दिल में पहचान लिया...

लेकिन... उसने कुछ नहीं कहा...

क्योंकि वह जानता था — "अगर मैंने अभी कुछ कहा तो... विशाल उन्हें मार डालेगा..."

वह चुप कर रहा...

और संजय...

धीरे-धीरे पीछे मुड़ा...

उसकी आँखों में दर्द झलक रहा था...
लेकिन चेहरे पर शांति का भाव...

"मेरा राज्य... मुझे पहचानता नहीं..." उसने मन ही मन कहा...

और वह फिर चला गया...

लेकिन उसे पता नहीं था... उसके पीछे एक तूफान मंडरा रहा था...
अध्याय 11: सत्य की छाया
महल के अंदर... बाहर से सब कुछ शांत लग रहा था... लेकिन उस शांति के पीछे...
एक बड़ा झूठ छुपाया गया था।

दरबार में... सिंहासन पर बैठा था —
राजा विशाल.

उसके चेहरे पर बनावटी आत्मविश्वास झलक रहा था...
लेकिन आँखों में...
लालच और क्रूरता स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी।

यात्रा के बाद...
उसने सबको धोखा दिया था...

उसने यह कहकर स्वयं को राजा घोषित कर दिया, "राजा अब जीवित नहीं है..."
.

किसी ने आपत्ति जताई...
इसलिए उसे सजा दी गई...

धीरे से...
सभी ने उस सत्य को स्वीकार कर लिया...

लेकिन...
वहाँ एक व्यक्ति था...
किसे पूरी सच्चाई पता थी?

रानी।

महल के एक अंधेरे कमरे में...
उसे कैद कर लिया गया...

उसके हाथ में एक चेन थी...
लेकिन उसका आत्मविश्वास अभी भी बरकरार था।

“दर्शन लौट आएगा...” वह मन ही मन कहती...

और उस दिन...सब कुछ बदल जाएगा...

इस दौरान...
स्वराज अपने दफ्तर में बैठी थीं...

उसके मन में विचारों का तूफान उमड़ रहा था...

“आज मैंने जो देखा...” उसने मन ही मन कहा,
“क्या यह सच था...?”

उनकी आंखों के सामने...
संजय का चेहरा बार-बार सामने आ रहा था...

“ये मेरे पिताजी हैं...”

उसे विश्वास हो गया...

लेकिन...

“मैं कुछ नहीं कर सका...” वह खुद पर गुस्सा था।

तब ही...
दरवाजे पर दस्तक हुई थी...

“राजकुमार...” एक सैनिक अंदर आया,
“महाराज विशाल आपको बुला रहे हैं।”

स्वराज चुपचाप जाग उठा...

अदालत पहुंचने पर...
विशाल ने उसकी ओर देखकर मुस्कुराया...

“आज तुमने क्या देखा...?” उसने धीमी आवाज में कहा।

स्वराज थोड़ा हैरान रह गया...

“क-क्या...?” उसने खुद को संभालते हुए कहा।

विशाल मुस्कुराया...

“वह मूर्ख...” उसने कहा,
“वह जिसने खुद को राजा कहा...”

स्वराज चुप रहा...

“ऐसे लोग खतरनाक होते हैं...” विशाल ने आगे कहा,
वे राज्य को धोखा देते हैं... वे जनता को भड़काते हैं...”

वह स्वराज के काफी करीब आ गया था...

“अगर वह फिर से प्रकट होता है..., तो उसे खत्म करने में जरा भी संकोच न करें।”

यह सुनकर...
स्वराज के हृदय में एक अग्नि प्रज्वलित हो उठी।

लेकिन उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं दिखा...

“जैसा आप कहें...” उसने धीमी आवाज़ में कहा।

विशाल मुस्कुराया...

“अच्छा...” उसने कहा,

तुम एक अच्छे योद्धा बन रहे हो।

स्वराज मुड़ी और चली गई...

लेकिन उन्होंने अपने मन में एक निर्णय पक्का कर लिया था।

मैं अब और चुप नहीं बैठूंगा...

उस रात...
वह अकेला खड़ा था...

आकाश की ओर देखते हुए...

"पिताजी... आप वापस आ गए..." उसने धीमी आवाज में कहा।
अब मैं तुम्हारे साथ खड़ा रहूंगा...

और उस क्षण से...

युद्ध अपरिहार्य हो गया।

अध्याय 12: तैयारी और योजना

संजय... यानी राजा दर्शन... राज्य के द्वार से लौट आए थे... लेकिन उनकी आँखों में अब दर्द नहीं था... एक निर्णय था।

वह सीधे वापस चला गया...
आदिवासी समुदाय को।

जैसे ही हम जंगल में पहुँचे...
उनका हार्दिक स्वागत किया गया...

"राजा आ गए हैं!" उत्सव शुरू हो गया।

संजय एक पल के लिए रुक गया...

"तुम्हें...सब कुछ पता है...?" वह आश्चर्य से पूछता है।

तब ही...
किंग पोंग आगे आया...

"हां..." उसने मुस्कुराते हुए कहा।
जब तुम अपने राज्य के द्वार पर खड़े होगे...
वहाँ हमारा एक आदमी मौजूद था।"

संजय का चेहरा गंभीर हो गया...

“तो फिर तुम सब कुछ जानते हो...” उसने कहा।

पोंग ने अपना सिर हिलाया...

और अब... हम आपके साथ हैं।

इन शब्दों के साथ...
संजय के मन में एक शक्ति का विचार आया।

“यह सिर्फ मेरी लड़ाई नहीं है...” उन्होंने कहा।
“यह न्याय की लड़ाई है।”

उस रात...
एक बड़ी बैठक थी...

सभी लोग आग के चारों ओर बैठे थे...

संजय वहाँ खड़ा था...

“15 साल पहले मैं राजा था...” उसने कहा।
लेकिन आज... मैं आपमें से ही एक हूँ।

सभी लोग चुपचाप सुन रहे थे...

लेकिन मेरा राज्य...आज एक झूठे राजा के हाथों में है...

उसकी आवाज में गुस्सा था...

"विशाल..." जैसे ही उसने यह नाम लिया, सबके चेहरे गंभीर हो गए।

“वह लोगों को परेशान करता है...और उसने मेरे परिवार को भी कैद कर रखा है...”

सबके दिलों में गुस्सा उमड़ आया।

“अब समय आ गया है...” संजय दहाड़ा।
उसे रोकने के लिए!

“हम तैयार हैं!” सभी ने एक साथ चिल्लाया।

लेकिन...
संजय ने अपना हाथ उठाया...

“केवल उत्साह ही काफी नहीं है... हमें एक योजना की आवश्यकता है।”

वह जमीन पर एक नक्शा बनाता है...

“यह हमारा राज्य है...” वह कहता है,
हम यहीं से हमला करेंगे...

वह सबको योजना समझाता है...

और आप अकेले नहीं हैं...

उस पल में...
कुछ लोग दूर से आते हुए दिखाई दे रहे हैं...

वह था...
वे ग्रामीण... जिन्हें संजय ने बचाया था।

एक के बाद एक...
कई गांवों से लोग वहां इकट्ठा होने लगे...

“आपने हमें आजादी दी...” एक ने कहा,
अब हम तुम्हारे लिए लड़ेंगे!

उस पल में...
एक विशाल सेना का गठन किया गया

संजय चुपचाप सबकी ओर देख रहा था...

“यह सिर्फ मैं ही नहीं हूँ...” उसने कहा,
यह युद्ध तुम्हारा भी है।

सभी ने अपने हथियार उठा लिए।

“युद्ध!” उनकी आवाज जंगल में गूंज उठी...

और उस क्षण से...

तूफान आ गया है।

जो सीधे विशाल के साम्राज्य पर हमला करने वाला था...

अध्याय 13: अंतिम युद्ध (न्याय)

युद्ध का दिन शुरू हो चुका था... पूरे युद्धक्षेत्र में तनाव फैल चुका था...
एक तरफ राजा दर्शन (संजय) और उनकी सेना।

दूसरी ओर—राजा विशाल और उनकी सेना

दोनों पक्षों के सैनिक तैयार खड़े थे...
लेकिन तलवारें अभी तक उठाई नहीं गई थीं...

यह विचार सामने आया...
उसने अपना हाथ उठाया...

"रुकना!"

पूरा युद्धक्षेत्र शांत हो गया...

उसने विशाल की ओर देखा और कहा—

“विशाल... अभी समय बीता नहीं है।”

विशाल मुस्कुराया...

“किसलिए...?” उसने व्यंग्यपूर्वक कहा।

दर्शन ने दृढ़ता से कहा —

“इस युद्ध को रोकने के लिए। इस राज्य को वापस देने के लिए... और लोगों के कष्टों को समाप्त करने के लिए।”

एक पल का मौन...

“मैं तुम्हें एक आखिरी मौका देता हूँ...” दर्शन ने कहा।
“सब कुछ शांति से रहने दो...वरना...तलवारें फैसला करेंगी।”

विशाल के चेहरे पर गुस्से का भाव साफ झलक रहा था।

“क्या तुम मुझे धमकी दे रहे हो...?”

वह जोर से हँस पड़ा...

“यह राज्य अब मेरा है! और तुम... एक पराजित राजा हो!”

दर्शन की आंखें अब कठोर हो गई थीं।

“ठीक है फिर...” उसने धीमी आवाज़ में कहा।
अब युद्ध के मैदान में न्याय मिलेगा।

और उसने तलवार उठा ली...

“युद्ध!”

(इसी बीच – महल में)
उससे ठीक एक रात पहले...

रानी अभी भी कैद में थी...

स्वराज उसके सामने खड़ी थी...

“माँ... वो आदमी कौन था...?” वह पूछता है।

रानी की आंखों में आंसू आ गए...

वह कुछ पल चुप रही...

और तब...

“वह आदमी नहीं है...” उसने धीमी आवाज में कहा।
“वह तुम्हारे पिता हैं...राजा दर्शन।”

स्वराज थ्रेथरला।

"क्या...?"

सब कुछ उसकी आंखों के सामने स्पष्ट हो गया...

“इसीलिए... यह मुझे परिचित सा लगा...”

रानी ने आगे कहा:

“उन्होंने 15 साल तक आपके लिए सब कुछ छोड़ दिया...और आज वापस आ गए...”

स्वराज की आंखों में आंसू भर आए...

"और हमने उन्हें पहचाना भी नहीं..."

वह अपनी मुट्ठी भींच लेता है...

“नहीं... मैं अब और चुपचाप नहीं बैठूंगा!”

(युद्धक्षेत्र में वापसी)
युद्ध शुरू हो चुका था...

दोनों सेनाएं एक-दूसरे पर टूट पड़ीं।

तलवारों की आवाज...घोड़ों की सरपट दौड़...चीख...

दर्शन युद्धक्षेत्र के बीचोंबीच लड़ रहा था...

तब ही...

"रुकना!!!"

एक तेज आवाज सुनाई दी...

सब लोग रुक गए...

सबकी निगाहें उस दिशा की ओर मुड़ गईं...

स्वराज दौड़ता हुआ आ रहा था...

वह दर्शन के ठीक सामने रुक गया...

उसकी आँखों में आँसू थे...

“बाबा...”

ये शब्द सुनकर...

दर्शन दंग रह गया...

15 साल बाद...
उसने यह बात पहली बार सुनी थी...

उसके हाथ में मौजूद तलवार थोड़ी नीचे गिर गई...

“स्वराज...?”

स्वराज उनके सामने घुटनों के बल बैठ गई...

“माफ़ कीजिए...मैंने आपको पहचाना नहीं...”

दर्शन ने उसे उठा लिया...

"नहीं...तुम्हारे साथ कुछ भी गलत नहीं है..."

एक पल के लिए...
युद्धक्षेत्र में शांति का माहौल छा गया...

लेकिन...

विशाल गुस्से से दहाड़ उठा।

"क्या नाटक खत्म हो गया!?"

वह तलवार लेकर आगे बढ़ा...

आज तुम दोनों का अंत है!

स्वराज खड़ी हो गई...

आज मैं अपने पिता से लड़ूंगा!

वह दृश्य के किनारे खड़ा था...

और एक बार फिर...

युद्ध शुरू हो गया है!

अंतिम लड़ाई
यह देखकर विशाल फूट-फूटकर रोने लगा...

दोनों के वार एक-दूसरे पर पड़ रहे थे...

धूल उड़ रही थी...

स्वराज अन्य सैनिकों को रोक रहा था...

दर्शन और विशाल की लड़ाई अपने चरम पर पहुंच जाती है...

वह अपार शक्ति का प्रयोग कर रहा था...

लेकिन नजारा बेहद शांत था...

वह अनुभव के साथ लड़ रहा था...

और तब...

सही समय पर...

दर्शन का निशाना चूक गया...

और उसने तलवार को जोरदार ढंग से घुमाया...

विशाल की तलवार नीचे गिर गई...

वह जमीन पर गिर पड़ा...

सब लोग रुक गए...

विशाल हारला होता...

दर्शन उसके सामने खड़ा था...

उन्होंने कहा, "यह राज्य... जनता का है... और आज... न्याय की जीत हुई है।"

युद्धक्षेत्र में एक अकेली आवाज गूंज उठी —

"राजा दर्शन!!!"

स्वराज उनके बगल में खड़ी थी...

पिता और बेटा...
एक साथ।

अध्याय 14: विजय और वापसी

युद्धक्षेत्र शांत हो गया था...धूल धीरे-धीरे बैठ रही थी...और उस सन्नाटे में...
एक नया इतिहास लिखा जा चुका था।

राजा विशाल पराजित हो गया...
उसका अहंकार... उसका अन्याय...
सब कुछ खत्म हो गया था।

दर्शन चुपचाप खड़ा रहा...
उसके चेहरे पर जीत की खुशी का कोई निशान नहीं था...
तो यह संतोषजनक था।

स्वराज उनके बगल में खड़ी थी...

"पिताजी..." उसने धीमी आवाज में कहा।

“आज आपने न केवल मुझे राज्य वापस दिया... बल्कि मेरा जीवन भी वापस लौटा दिया।”

दर्शन ने हल्की सी मुस्कान बिखेरी...

“नहीं, स्वराज... तुमने ही तो आज मुझे वापस दिया।”

दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा और मुस्कुराए।

महल में
कम समय में...
राजा दर्शन महल लौट आए...

वही दरवाजा...
जहां से उसे निष्कासित किया गया था...

आज...
वह उसी दरवाजे से वापस अंदर आ रहा था...
एक राजा के रूप में।

राज्य भर में उत्सव शुरू हो गए।

“राजा दर्शन लौट आए हैं!” यह आवाज हर जगह गूंज उठी...

फूल खिल रहे थे...
लोग खुशी से नाच रहे थे...

लेकिन...
दर्शन की निगाहें किसी व्यक्ति को खोज रही थीं...

रानी।

वह झटपट उस कोठरी में चला गया...

दरवाजा खुल गया...

और अंदर...
रानी खड़ी थी...

दोनों कुछ पल के लिए एक-दूसरे को देखते रह गए...

15 साल का अलगाव...
वह एक ही पल में घुल गया...

रानी की आंखों में आंसू आ गए...

“मुझे पता था...” उसने धीमी आवाज में कहा।
तुम वापस आओगे...

दर्शन उसके पास गया...

"मैंने वादा किया था..."

दोनों ने एक दूसरे को गले लगाया।

और उस क्षण...

एक परिवार का पुनर्मिलन हुआ।

स्वराज भी उनके करीब आ गए थे...

दर्शन ने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा...

“आज से...यह राज्य तुम्हारा है...”

स्वराज ने आश्चर्य से कहा—

“लेकिन पिताजी... आप...?”

दर्शन ने धीमी आवाज़ में कहा—

“राजा होने का मतलब सिर्फ सिंहासन पर बैठना ही नहीं है... बल्कि अपनी प्रजा की रक्षा करना भी है।”

और आप... यह कर सकते हैं।

स्वराज की आंखों में आत्मविश्वास झलक उठा।

राज तिलक
कुछ दिनों बाद...
एक भव्य समारोह आयोजित किया गया...

पूरा महल सजाया गया था...

सभी मंत्री, सैनिक और प्रजाजन उपस्थित थे...

दर्शन स्वयं खड़ा था...

और उसके सामने...
स्वराज.

उन्होंने ताज उठाया...

और धीरे-धीरे...

स्वराज के सिर पर रखा गया।

“आज से...” दर्शन की आवाज अदालत में गूंज उठी।

“ये रहा आपका नया राजा – स्वराज!”

सभी ने एक स्वर में घोषणा की —

“राजा स्वराज की जय!”

अंत
राज्य में शांति लौट आई है...

अन्याय का अंत हो गया है...

लोग सुखमय जीवन जीने लगे...

दर्शन अब एक संतमय जीवन का संसार बन गया है...

लेकिन...

उनकी कहानी...
उनका बलिदान...
उनकी बहादुरी...

वह हमेशा सबके दिलों में जीवित रहेंगे।

और लोग आपस में कहने लगे—

“राजा वह होता है जो अपने लिए नहीं बल्कि अपनी प्रजा के लिए जीता है।”

***** **समाप्त** *****